कब सहिष्णु थे आप ?

भंवर मेघवंशी

कौन से युग ,किस सदी ,
किस कालखंड में ,सहिष्णु थे आप ?

देवासुर संग्राम के समय ? जब अमृत खुद चखा
और विष छोड़ दिया
उनके लिए ,
जो ना थे तुमसे सहमत.
दैत्य ,दानव ,असुर ,किन्नर यक्ष ,राक्षस
क्या क्या ना कहा उनको.
वध ,मर्दन ,संहार
क्या क्या ना किया उनका .
.....
तब थे आप सहिष्णु ?
जब मर्यादा पुरुषोत्तम ने काट लिया था
शम्बूक का सिर .
ली थी पत्नी की चरित्र परीक्षा
और फिर भी छोड़ दी गई
गर्भवती सीता अकेली वन प्रांतर में . या तब ,जब
द्रोण ने दक्षिणा में कटवा दिया था
आदिवासी एकलव्य का अंगूठा .
जुएं में दांव पर लगा दी गयी थी
पाँच पांच पतियों की पत्नि द्रोपदी
और टुकर टुकर देखते रहे पितामह .
.....
या तब थे आप सहिष्णु ?
जब ब्रह्मा ने बनाये थे वर्ण
रच डाली थी ऊँच नीच भरी सृष्टि
या तब ,जब विषमता के जनक ने
लिखी थी विषैली मनुस्मृति .
जिसने औरत को सिर्फ
भोगने की वस्तु बना दिया था .
शूद्रों से छीन लिए गए थे
तमाम अधिकार . रह गए थे उनके पास
महज़ कर्तव्य . सेवा करना ही
उनका जीवनोद्देश्य बन गया था .
और अछूत धकेल दिये गए थे
गाँव के दख्खन टोलों में . लटका दी गई थी
गले में हंडिया और पीठ पर झाड़ू
निकल सकते थे वे सिर्फ भरी दुपहरी .
ताकि उनकी छाया भी ना पड़े तुम पर .
इन्सान को अछूत बनाकर
उसकी छाया तक से परहेज़ !
नहीं थी असहिष्णुता ?
.....
आखिर आप कब थे सहिष्णु ?
परशुराम के क्षत्रिय संहार के समय
बौद्धों के कत्लेआम के वक़्त
या महाभारत युद्ध के दौरान .
लंका में आग लगाते हुए
या खांडव वन जलाते हुये .
कुछ याद पड़ता है
आखिरी बार कब थे आप सहिष्णु ?
.....
अछूतों के पृथक निर्वाचन का
हक छीनते हुए ,
मुल्क के बंटवारे के समय दंगों के दौरान ,
पंजाब ,गुजरात ,कश्मीर ,पूर्वोत्तर ,
बाबरी ,दादरी ,कुम्हेर ,जहानाबाद
डुंगावास और झज्जर
कहाँ पर थे आप सहिष्णु ?
सोनी सोरी के गुप्तांगों में पत्थर ठूंसते हुए .
सलवा जुडूम ,ग्रीन हंट के नाम पर
आदिवासियों को मारते हुए .
लोगों की नदियाँ ,जंगल ,
खेत,खलिहान हडपते वक़्त .
आखिर कब थे आप सहिष्णु ?
दाभोलकर ,पानसरे ,कलबुर्गी के
कत्ल के वक़्त .
प्रतिरोध के हर स्वर को
पाकिस्तान भेजते वक़्त
फेसबुक ,ट्वीटर ,व्हाट्सएप
किस जगह पर थे आप सहिष्णु ?
.....
प्राचीन युग में , गुलाम भारत में आजाद मुल्क में
बीते कल और आज तक भी
कभी नहीं थे आप कतई सहिष्णु .
सहिष्णु हो ही नहीं सकते है आप
क्योंकि आपकी संस्कृति ,साहित्य ,कला
धर्म ,मंदिर ,रसोई ,खेत ,गाँव ,घर .
कहीं भी नहीं दिखाई पड़ती है सहिष्णुता
सच्चाई तो यह है कि आपके
डीएनए में ही नहीं है
सहिष्णुता युगों युगों से .....

2022 का मेडिसिन/फिजियोलॉजी का नोबेल पुरस्कार डॉ. स्वांते पेबो को मिला है, इन्होंने खोजा क्या ?

नवनीत नव

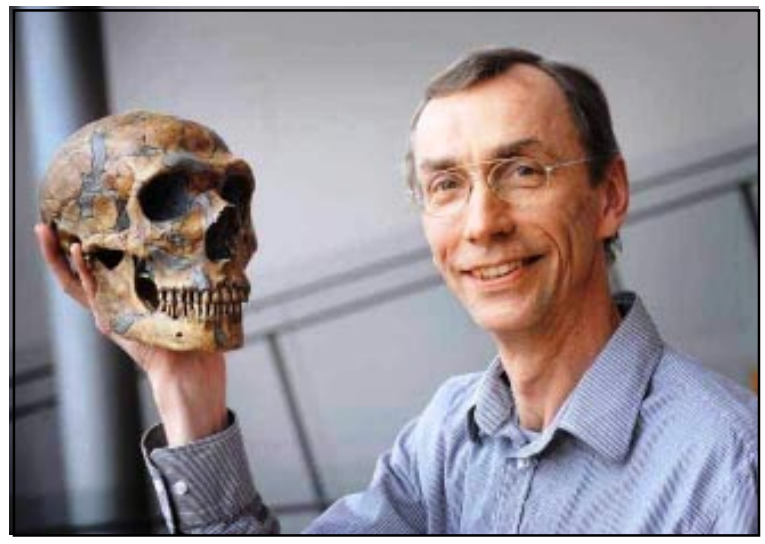

आज के समय विज्ञान मानता है कि आधुनिक मानव यानि होमो सेपियंस यानि हम लोग इस धरती पर सबसे पहले अफ्रीका में 300000 साल पहले दिखाई दिए थे। लेकिन हमसे पहले एक अन्य मानव प्रजाति अफ्रीका से बाहर विचरण कर रही थी। यह प्रजाति थी नियंडरथल मानवों की। नियंडरथल मानव 400000 लाख साल पहले धरती पर आये थे और यूरोप व एशिया के अधिकतर भूभाग में फैले हुए थे।

लगभग 70000 साल पहले आधुनिक मानवों ने अफ्रीका से एशिया की धरती पर कदम रखा था। आज से 30000 हजार साल पहले नियंडरथल मानव विलुप्त हो गए। तो इसका मतलब यह हुआ कि लगभग 40000 साल तक होमो सेपियंस और नियंडरथल मानव एक साथ यूरोप और एशिया में विचरण कर रहे थे।

1990 के दशक में वैज्ञानिकों ने मानव के जेनेटिक कोड को देखना शुरू किया। इसके लिए नए नए औजार और नई तकनीकें विकसित हो रही थी। डॉ स्वांते पेबो ने इन्हीं औजारों और तकनीकों की मदद से नियंडरथल मानव के जेनेटिक कोड का अध्ययन करने करने लगे। लेकिन ये तकनीकें नियंडरथल मानव के डीएनए को समझने के लिए कारगर सिद्ध नहीं हो रही थीं क्योंकि नियंडरथल का डीएनए पूर्ण अवस्था में मिलता ही नहीं था।

म्युनिख विश्वविद्यालय में काम करते हुए डॉ पेबो ने माईटोकॉन्डरिया (हमारी कोशिकाओं में मौजूद एक विशेष संरचना जिसे कोशिका का पावर हाउस भी कहा जाता है) में मौजूद डीएनए का अध्ययन करने पर ध्यान केंद्रित किया। हालांकि माईटोकॉन्डरिया के डीएनए में कोशिका के डीएनए से कम जानकारी होती है लेकिन नियंडरथल के केस में यह कोशिका के डीएनए से ज्यादा अच्छी हालत में मिल रहा था इसलिए सफलता की संभावना ज्यादा हो गई थी।

अपनी नई तकनीक के द्वारा पेबो ने नियंडरथल मानव की एक 40000 हजार साल पुरानी हड्डी के माईटोकॉन्डरिया के डीएनए का सीक्वेन्स बनाने में सफलता हासिल कर ली। और यह पहला सबूत था जो यह बताता है कि आधुनिक मानव नियंडरथल से जेनेटिक तौर पर भिन्न है। यानि यह एक भिन्न प्रजाति है।

2010 में पेबो और उनकी टीम ने नियंडरथल का पहला जेनेटिक सीक्वेन्स छापा। पेबो की इस खोज ने हमें यह बताया कि आज से आठ लाख साल पहले हमारा यानि होमो सेपियंस और नियंडरथल मानव का एक कॉमन पूर्वज इस धरती पर था।

पेबो और उनकी टीम को आधुनिक मानव के डीएनए में नियंडरथल के डीएनए के अंश भी मिले जिससे यह पता चलता है आधुनिक मानव और नियंडरथल मानव के बीच में इंटरब्रीडिंग होती रही है।

लेकिन सिर्फ यही काफ़ी नहीं था। पेबो को दक्षिणी साइबेरिया की एक गुफा में 40000 साल पुरानी इंसानी ऊँगली की हड्डी मिली थी। जब पेबो ने इसकी डीएनए सीक्वेन्सिंग की तो उन्हें कुछ ऐसा मिला जोकि आज तक किसी को नहीं मिला था। इस हड्डी का डीएनए न तो नियंडरथल के डीएनए से मिलता था और न ही आधुनिक मानव के डीएनए से। यह मानव की एक सर्वथा नई प्रजाति थी। इस नई प्रजाति को डेनिसोवा नाम दिया गया क्योंकि जिस जगह यह हड्डी मिली थी उस जगह को डेनिसोवा ही कहा जाता है। डेनिसोवा और नियंडरथल लगभग 600000 साल पहले एक दूसरे से अलग हुए थे।

लेकिन अभी एक महत्वपूर्ण खोज और बाक़ी थी। दक्षिण पूर्व एशिया के लोगों में से 6त्न में डेनिसोवा मानव के डीएनए के अंश भी मिले हैं, जिससे पता चलता है कि इन दोनों समूहों के बीच भी सम्पर्क रहा होगा।

बहरहाल इन खोजों ने हमारे पूर्वजों के बारे में हमारी जानकारी को विकसित किया है। साथ ही इनसे हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता के विकास को समझने में भी मदद मिली है।

तीस साल पहले शुरू हुई विज्ञान की इस नई शाखा ने अब फल देने शुरू किये हैं, उम्मीद है कि आगे भी मानव अपने ज्ञान का दायरा बढ़ाता रहेगा।

इसके अलावा एक और बात। डॉ स्वांते पेबो 1982 के फिजियोलॉजी/मेडिसिन के नोबेल पुरस्कार विजेता सुनये बेर्गस्त्रोम के पुत्र हैं। सुनये बेर्गस्त्रोम को नोबेल पुरस्कार प्रोस्टाग्लैंडिन नामक एक बायोकेमिकल के ऊपर उनके काम के लिए मिला था।

भाषा ज्ञान / डॉक्टर रणबीर सिंह

दो टैक्सी ड्राइवर कमलू और रमलू टैक्सी स्टैंड पे बैठे बातें कर रहे थे...
कि तभी एक विदेशी उनके पास पहुंचा और उनसे अंगरेजी भाषा में उनसे कुछ पूछा. दोनों ड्राइवर बेवकूफों की तरह उस विदेशी के चेहरे को देखते रहे.
विदेशी समझ गया कि दोनों को अंगरेजी नहीं आती.
अब उसने वही प्रश्न उनसे स्पेन की भाषा स्पेनिश में पूछा.
दोनों फिर बेवकूफों की तरह विदेशी का चेहरा देखते रहे.
तीसरी बार विदेशी ने वही प्रश्न उनसे रूस की भाषा रशियन में पूछा.
दोनों का वही हाल रहा.
चौथी बार विदेशी ने वही प्रश्न उनसे जर्मनी कि भाषा जर्मन में पूछा.
दोनों फिर वैसे ही उसका चेहरा ताकते रहे.
आखिर तंग आकर विदेशी चला गया.
कमलू ड्राइवर ने कहा--" यार, हम लोगों को भी अपनी भाषा के अलावा कोई दूसरी भाषा सीखनी चाहिए, हमारे काम आएगी."
रमलू ने एक जोर का झापड़ लगाया और बोला--"साले, उसको चार चार आती थी, उसके कोई काम आई."

ऐसे महान लोग सिर्फ भारत में ही पैदा हो सकते हैं